41. **ओ.आर.सी. गुड़गांव।** समर्पण समारोह के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में नेपाल के प्रसिद्ध नृत्य 'याक नृत्य' की प्रस्तुति देने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं नेपाल की ब्र.कु.राज, नेपाल की ब्र.कु.किरण, ओ.आर.सी.की संचालिका ब्र.कु.आशा, ब्र.कु.बृजमोहन तथा नेपाल के कलाकार।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

प्रथम सप्ताह

स्वमान - मैं बाप समान संतुष्टमणी हूँ।

- संतुष्टता की शक्ति सबसे महान् है इसलिए इसमें सर्व प्राप्तियां समायी हुई है।
- संतुष्टता में सर्व शक्तियां समाहित है।
- संतुष्टमणी आत्माएं माया से कभी हार नहीं खाती, माया हार खाती है।
- संतुष्टमणियां माया व प्रकृति के हलचल को ऐसे अनुभव करती हैं जैसे कार्टून शो देख रहे हों।

योगाभ्यास - बापदादा की हजारों भुजायें मेरे सिर के ऊपर है... मैं उनकी छत्रछाया में बेहद संतुष्ट और आनंदित हूँ... प्यारे बापदादा के कमलहस्तों से सर्व खजाने, सर्व वरदान, गुण व शक्तियां निकलकर मुझमें समा रही हैं... जिससे मैं भरपूर, संतुष्ट और तृप्त होता जा रहा हूँ...।

अशरीरी बनने की ड्रिल - बापदादा सभी के लिए कहते हैं कि बीच-बीच में समय निकालकर एकदम अशरीरी बनने की ड्रिल जरूर करना है क्योंकि आने वाले समय में सेकण्ड में अशरीरी बनना ही पड़ेगा।

धारणा - संतुष्टता।

शिवभगवानुवाच - आज बापदादा का विशेष वरदान है संतुष्टता की शक्ति से संपन्न भव। कुछ भी हो जाए अपनी संतुष्टता को कभी नहीं छोड़ना। कोई कुछ भी करता है, दिल में नहीं रखो। दिल में बात को नहीं बाप को रखो। सदा ऐसी आत्मा के प्रति शुभ-भावना, शुभकामना रखकर अपनी शुभकामना को कर्म में लगाओ।

चिंतन - आज संतुष्टता की आवश्यकता एवं महत्ता क्यों है ?

- कौनसी बातें हमें असंतुष्ट करती हैं और उसका कारण क्या है ?
- सदा संतुष्टमणि कैसे बनें ?
- संतुष्टता के लिए बाबा के महावाक्यों में स्मृति में लायें।

साधकों प्रति - प्रिय साधकों ! क्या हम स्वयं को संतुष्टता की शक्ति से सम्पन्न समझते हैं ? हम स्वयं से पूछे कि क्या मैं संतुष्टमणी हूँ ? इस पर अधिकांशत: हमारा जवाब होता है कि हम कभी-कभी तो संतुष्ट रहते हैं, सदा नहीं। परंतु बापदादा को ''कभी-कभी'' शब्द अच्छा नहीं लगता है। वे कहते हैं कि क्या ब्रह्मा बाबा ने क्या ''कभी-कभी'' शब्द कहा ? जब उन्होंने नहीं कहा तो तुम्हें भी तो फॉलो फादर करना है ना ! बाप से प्यार है तो प्यार में इस ''कभी-कभी'' शब्द को न्यौछावर करो।

दूसरा सप्ताह

स्वमान - मैं ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्ण निश्चय बुद्धि विजयी आत्मा हूँ।

ब्रह्मा बाप समान निश्चय बुद्धि अर्थात् किसी भी बात में क्वेश्चन मार्क का टेड़ा रास्ता लेने के बजाए कल्याण की बिन्दी लगाना और सदा निश्चिंत रहना।

- हर जिम्मेवारी संभालते हुए यह समझना कि यह बाप की जिम्मेवारी है, मैं निमित्त मात्र हूँ।
- किसी भी परिस्थिति में सदा समर्थ संकल्प में रहना। किसी भी बात में संकल्प मात्र भी यह संशय नहीं कि यह होगा या नहीं...।

योगाभ्यास - निश्चय का अर्थ सिर्फ यह नहीं कि मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ। लेकिन मैं कौनसी आत्मा हूँ - यह स्वमान समय पर अनुभव हो। सदा इसी स्वमान में रहो कि मैं विजयी आत्मा, पास विद् ऑनर होने वाली आत्मा हूँ।

- मैं निमित्त करनहार हूँ, करावनहार बाप है - इस निश्चय से डबल लाइट अर्थात् लाइट के ताजधारी बन बेफिक्र बादशाह बनो। जब ऐसे बेफिक्र बादशाह अर्थात् राजा बनेंगे तब मायाजीत, कर्मेन्द्रिय जीत प्रकृतिजीत बन सकेंगे।

धारणा - निश्चय बुद्धि।- निश्चय के फाउण्डेशन के चार स्तंभ हैं बाप में निश्चय के साथ-साथ अपने श्रेष्ठ स्वमान को, ब्राह्मण परिवार को और इस पुरुषोत्तम युग के समय के महत्व को यथार्थ जानना, मानना और उसी प्रमाण चलना ही सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि बनना है।

चिंतन - निश्चय बुद्धि विजयन्ति और संशयबुद्धि विनश्यन्ति क्यों कहा गया है ?

- संशय क्यों उत्पन्न होता है और उससे क्या नुकशान होते हैं ?
- सदा ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्ण निश्चय बुद्धि कैसे बनें ?

साधकों प्रति - प्रिय साधकों ! हम सभी ब्राह्मणवत्सों का एक ही लक्ष्य है अपने प्यारे पिता ब्रह्मा बाबा के समान बनना। इसके लिए हमें उनके कदम पर कदम मिलाकर चलना होगा। जैसे कर्म उन्होंने किए वैसे ही कर्म हमें भी करना होगा, जैसा उनका जीवन था उसे अपने जीवन में उतारना होगा। तो आयें, ब्रह्मा बाबा के हर कदम पर हम गहराई से विचार करें और उसे आचरण में लायें ताकि अपने पिता के समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनकर हम उनकी आशाओं को पूर्ण कर सकें।

अफजलपुर (कर्नाटक)। विधायक एम.वाय.पाटील को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.विजया।

आगरा, सिंकन्दरा। आयकर विभाग के कमिश्नर अनुराधा को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.विमला।

फतेहाबाद। दैनिक जागरण के वरिष्ठ पत्रकार मनोज रेवड़ी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.दीपक साथ में हैं ब्र.कु.किरण।

आलिपाड। शिव संदेश देने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं बाईब्रेंट स्कूल के चेयरमेन प्रिती राजगुरु, ब्र.कु.फाल्गुनी, ब्र.कु.अविनाश तथा अन्य।

बड़ौदा, मंगलवाड़ी। ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं प्रिंसीपल मितेश शाह, ब्र.कु.राज तथा समस्त विद्यार्थी एवं शिक्षक।

बोरवीरा। 'नारी सम्मेलन' को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.गीता तथा साथ में हैं गुजरात महिला आयोग की अध्यक्षा चेतना तिवारी, प्रिंसीपल पुष्पा थानकी।

ईश्वर-परम शिक्षक.... पेज 5 का शेष..

कारण परमात्मा ही सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान देते हैं, कोई मनुष्य नहीं। विद्वानों के लिए तो सृष्टि एक रहस्य ही है।

परमात्मा नारी को ज्ञान-कलश देते हैं - परमात्मा ने ज्ञान-अमृत का कलश मातृशक्ति को प्रदान करके उन्हें शिव शक्ति, असुर संहारिनी बनाया। जो मातृ-शक्ति आज तक पद-दलित थी, उसी के द्वारा परमात्मा नव-सृष्टि रचना का दिव्य कार्य कराते हैं। जब परमात्मा धरा पर आते हैं तो उनकी उपस्थिति उनके सर्वशक्तिवान होने का स्पष्ट आभास देती है। उनकी ज्ञान-वीणा सुनकर उनके ज्ञान-सागर होने में संशय नहीं रह जाता। उनके अवतरित होते ही शांति सागर की असीम शांति चारों ओर फैल जाती है। उनके आते ही सबके प्रश्न स्वत: ही हल हो जाते हैं। उनके आते ही मनुष्यों के अहंकार दूर हो जाते हैं। उनको मिलते ही आभास हो जाता है कि ये वो ही परमपिता है जिसे हमने जन्म-जन्म ढूंढा था। उनके मधुर बोल उनके प्यार का सागर होने की अनुभूति कराते हैं। उनमें चुम्बकीय रूहानी आकर्षण रहता है। उनकी दृष्टि पड़ते ही आत्माओं को दिव्य अनुभव होने लगते हैं।तो हे ऐसे प्रभु प्रेमियों, आओ - तुम्हारा परमपिता अब तुम्हें बुला रहा है, उसकी शीतल गोद में समा जाओ। कहां तुम उसकी क्षणिक आकाशवाणी को सुनने को आतुर थे, और कहां वह निरंतर ज्ञान की सरिता बहा रहा है। आओ, ईश्वर की वाणी सुनो और ईश्वरीय सुखों से अपने जीवन को तृप्त कर लो। अब उसे यहां वहां ढूंढ़ो नहीं, आकर उससे अपना जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त करो।